अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

कामानुवृद्धि है दुःख का कारण: महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण

-केरल में गतिमान अहिंसा यात्रा ने अपने प्रणेता संग एर्नाकुलम जिले में किया मंगल प्रवेश

-लगभग बारह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री पहुंचे कोथाकुलंगरा गांव

-श्री भद्रा आॅडिटोरियम से आचार्यश्री ने बताया दुःख मुक्ति का मार्ग

27.02.2019 कोथाकुलंगरा, एर्नाकुलम (केरल): पहाड़ों, नदियों की प्रचुरता और समुद्र के निकटता के कारण केरल प्राकृतिक संपदाओं से परिपूर्ण हैं। अनेकों फल, मसाले आदि यहां प्रचुर मात्रा में होते हैं। विशेषतया नारियल और केले की खेती के लिए यह राज्य प्रसिद्धि को प्राप्त है। जितनी यहां की प्रकृति उन्नत है, उतनी ही संस्कृति भी उत्कृष्ट है। ऐसे प्रदेश को आध्यात्मिक रूप से सम्पन्न बनाने और मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा के प्रणेता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी अहिंसा यात्रा के साथ गतिमान हैं। आचार्यश्री जहां कहीं भी अहिंसा यात्रा के साथ पधार रहे हैं लोगों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की पावन प्रेरणा प्रदान कर रहे हैं। आचार्यश्री की अमृतवाणी से यहां का जन-जन लाभान्वित हो रहा है।

अपनी केरल यात्रा के दौरान बुधवार को आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अपनी धवल सेना के साथ त्रिशूर जिले के चलक्कुडी स्थित एस.एन.डी.पी. आॅडिटोरियम से मंगल प्रस्थान किया। विहार के दौरान अनेक केरलवासियों ने आचार्यश्री के दर्शन किए तो आचार्यश्री ने उन्हें पावन आशीष प्रदान की। कुछ किलोमीटर के विहार के बाद आचार्यश्री ने केरल राज्य के एक निए जिले एर्नाकुलम जिले की सीमा में मंगल प्रवेश किया। त्रिशूर जिले से एर्नाकुलम जिले में गतिमान आचार्यश्री कुल लगभग बारह किलोमीटर का विहार कर कोथाकुलंगरा स्थित श्री भद्रा आॅडिटोरियम में पधारे।

यहां आयोजित मंगल प्रवचन कार्यक्रम में उपस्थित श्रद्धालुओं को आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि जो कोई भी कार्य होता है उसका कोई न कोई कारण होता है। बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता। जिस प्रकार घड़े को एक कार्य मान लिया जाए तो उसके लिए कारण मिट्टी, कुम्हार और साधन हैं। इसी प्रकार दुःख का भी कारण होता है। दुनिया में शायद ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा, जिसके जीवनकाल में कोई दुःख न हो। दुनिया में भला दुःखमुक्त कौन हो सकता है। हर किसी को कोई न कोई दुःख अवश्य होता है। दुःख का मुख्य कारण है कामानुवृद्धि। आदमी पदार्थों के प्रति कोई कामना रखता है और जब वह पदार्थ उसे प्राप्त नहीं होता तो उसे दुःख हो सकता है। आदमी किसी से सम्मान आदि की अपेक्षा रखता है और उसे वह न प्राप्त हो तो भी आदमी दुःखी हो सकता है। आदमी भोग की कामना करता है और उसकी पूर्ति न होने से भी वह दुःखी होता है। यदि कोई कामना न हो तो दुःख हो ही नहीं सकता। कामना होती है तो दुःख पैदा हो जाता है। आदमी की कुछ खाने की इच्छा हो और उसे वह वस्तु न उपलब्ध हो तो दुःख हो सकता है।

जो आदमी कामना का पार पा लिया, मानों वह दुःख का पार पा लिया। वीतराग पुरुष कामनाओं का पार पा जाते हैं, इसलिए वे दुःखमुक्त हो जाते हैं। आदमी को भी अपनी कामनाओं को कम करने का प्रयास करना चाहिए और दुःख से मुक्त रहने का प्रयास करना चाहिए। आदमी पदार्थों और भोगों के प्रति आकर्षण को कम करने का प्रयास करे। आदमी कामानुवृद्धि को छोड़ने का प्रयास करे तो वह सुख की दिशा में गति कर सकता है।